# तुलसीदास

**कवि परिचय** :– तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन् 1532 में हुआ । कुछ लोग इनका जन्म स्थान सोरों मानते हैं । इनका बचपन कष्ट में बीता । बचपन में आपको अपने माता पिता का वियोग सहना पड़ा । गुरू नरहरि दास की कृपा से आपको रामभक्ति का मार्ग मिला । आपका विवाह रत्नावली नामक युवती से हुआ । उसकी फटकार से ही तुलसीदास वैरागी हो गये तथा रामभक्ति में लीन हो गये । विरक्त होकर आप काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थो पर घूमा करते थे । आप का निधन सन् 1623 में काशी में हुआ ।

## कवितावली (उत्तर कांड से)

**पाठ परिचय** :– कवि का कहना है व्यक्ति पेट की भूख मिटाने के लिए तरह–तरह के यत्न करता है, क्योंकि समाज में बेरोजगारी फैली है । जीविका विहीन लोग बहुत दुःखी हैं । इस संकट से केवल प्रभु राम ही मुक्ति दिला सकते हैं । तुलसीदास का कहना है वे प्रभु राम के दास हैं संसार उसके बारे में क्या सोचता है उन्हें इस की चिन्ता नहीं ।

किसबी, किसान–कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी ।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन–गन अहन अखेटकी ।।
ऊँचै–नीचे करम, धरम–अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा–बेटकी ।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी ।।

**व्याख्या** :– व्यापारी, किसान, बनिया, चारण, नौकर, चंचल नट, चोर, दूत, बाजीगर पेट के लिए पढ़ते हैं, कलाएँ सीखते है, पर्वत पर चढ़ते हैं, घने जंगल में घूमते हैं, ऊँचे–नीचे कर्म करते हैं, धर्म–अधर्म करते हैं, यहाँ तक कि पेट भरने के लिए अपने बेटा–बेटी को बेच देते हैं । तुलसीदास कहते हैं राम घनश्याम रूपी बादल ही इस पेट की आग को बुझा सकते हैं, क्योंकि पेट की आग समुद्र की आग से अधिक शक्ति शाली है, अर्थात् प्रभु राम की कृपा हो तो कोई भूखा नहीं रहता ।

**भाषा सौन्दर्य** :–

1. ब्रज भाषा
2. कवित छन्द
3. तुकान्त रचना
4. भक्ति भाव, शान्त रस
5. राम घनश्याम रूपक अलंकार
6. किसबी, किसान–कुल, भिखारी भाट, चाकर चपल, चोर चार चेटकी, पेट को पढ़त, गहन–गन आदि में अनुप्रास अलंकार ।

VASUNDHARAHINDI.COM

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी ।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी ?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलाकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम ! रावरें कृपा करी ।
दारिद–दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित–दहन देखि तुलसी हहा करी ।।

**व्याख्या** :– किसानों के पास खेती करने योग्य खेत नहीं, भिखारियों को भीख नहीं मिलती, न दान मिलता है, व्यापारी के पास व्यापार नहीं, नौकर के पास नौकरी नहीं । बेरोजगार लोग दुखी हो कर सोच रहे हैं तथा एक दूसरे से कहते हैं कहाँ जायें क्या करें ? वेद पुराण कहते हैं तथा संसार में देखा भी है कि कठिन समय में कृपालु राम ही कृपा करते हैं । दरिद्रता रूपी रावण ने सब को दबा रखा है । दरिद्रता के कारण जो पाप व विनाश हो रहा है तथा सारा संसार हाहाकार कर रहा है, दीनबंधु श्री राम ही इससे मुक्ती दिला सकते हैं ।

**भाषा सौन्दर्य** :–

1. ब्रज भाषा
2. कवित छन्द
3. तुकान्त रचना
4. भक्ति भाव, शान्त रस
5. दारिद–दसानन रूपक अलंकार
6. सीद्यमान सोच, एक एकन, का करी, साँकरे सबैं, राम रावरें, कृपा करी, दारिद दसानन ..... दीनबंधु, दुरित दहन देखि अनुप्रास अलंकार ।

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ,
जोलहा कहौ कोऊ ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब,
काहूकी जाति बिगार न सोऊ ।।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को,
जाको रूचै सो कहै कहु ओऊ,
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो,
लैबोको एकु न दैबको दोऊ ।

**व्याख्या** :– तुलसीदास कहते हैं कोई मुझे धूर्त कहो, परमहंस कहो, राजपूत कहो, जुलाहा कहो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि किसी की बेटी के साथ मैंने अपने बेटे का विवाह नहीं करना है, न मुझे किसी की जाति बिगाड़नी है । तुलसीदास तो राम के प्रसिद्ध गुलाम हैं । इसलिए जिसे जो अच्छा लगता है वो मुझे कह सकता है । मैं तो माँग कर खाता हूँ, मस्जिद पर सो जाता हूँ, मुझे किसी से कुछ लेना देना नही है ।

**भाषा सौन्दर्य :–**

1. ब्रज भाषा
2. सवैया छन्द
3. दास्य भाव
4. 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' मुहावरा
5. कहौ कोऊ, बेटीसों बेटा, कहै कछु आदि में अनुप्रास अलंकार

## लक्ष्मण–मूर्च्छा और राम का विलाप

**पाठ का सार** :– युद्ध में लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाने हैं । हनुमान संजीवली बूटी लेने जाने हैं । जैसे जैसे हनुमानको आने में विलम्ब हेा रहा है, राम की व्याकुलता बढ़ती जाती है और वह विलाप करने लगते हैं एक साधारण मनुष्य की तरह । उसी समय हनुमान संजीवली बूटी ले आता है और उसका उपचार हो जाता है । वह ठीक हो जाता है । इस बात का पता जब रावण को लगता है वह व्याकुल हो जाता है तथा कुंभकरण को बताता है–कैसे उसने सीता हरण किया तथा कैसे युद्ध में उसके बड़े–बड़े योद्धा मारे गये । रावण की बात सुनकर कुंभकरण कहता है–राम साक्षात् हरि हैं तथा सीता जगदम्बा है । अब अगर तुम अपना कल्याण चाहते हो, वह सम्भव नही है ।

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहउँ नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमत ।।
भरत बाहु बल सील गुन प्रभु पद प्रीति अपार ।
मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार ।।

**व्याख्या** :– हनुमान संजीवनी बूटी लेकर लंका जा रहे हैं । रास्ते में भरत उन्हें रोक लेता हैं और जब वो लक्ष्मण की मूर्च्छा की बात सुनते हैं वे हनुमान को तुरन्त जाने के लिए कहते हैं । हनुमान प्रभु राम का यश हृदय में रखकर कहने हे ! स्वामी (भरत) मैं तुरन्त ही लंका जाता हूँ । ऐसा कहकर तथा भरत के पैरो में नमन कर हनुमान चल देते हैं । हनुमान रास्ते में सोच रहे हैं–भरत शक्तिशाली है, शालीन है, प्रभु राम के चरणों में उसका अत्यधिक प्रेम है । इस प्रकार वो बार–बार भरत की मन ही मन प्रशन्सा करते हैं ।

**भाषा सौन्दर्य :–**

1. अवधी भाषा
2. दोहा छन्द
3. तुकान्त रचना
4. मन महुँ अनुप्रास अलंकार
5. पुनि–पुनि पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

**शब्दार्थ** :– तव = तुम्हारा, प्रताप = यश, जेहऊँ = जाऊँगा, आयुस = आज्ञा, बंदि = वंदना कर के (नमन कर के), अपार = अधिक, सराहत = प्रशंसा करना, पुनि–पुनि = बार–बार, पवन कुमार = हनुमान

उहां राम लछिमनहि निहारी ।
बोले बचन मनुज अनुसारी ।।
अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ ।
बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता ।
सहेहु बिपिन हिम आतप बाता ।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई ।
उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।
जौं जनतउँ बन बंधु बिछोहू ।
पितु बचन मनतेउँ नहिं ओहू ।।

**शब्दार्थ** :– निहारी = देख कर, मनुज = मनुष्य, अनुसार = समान, आयउ = आया, अनुज = छोटा भाई (लक्ष्मण), मृदुल = कोमल, सुभाऊ = स्वभाव, तजेहु = त्याग दिया, विपिन = जंगल, आतप = धूप, बाता = हवा, बिकलाई = व्याकुल, बिछोहू = बिछड़ना, मनतेउँ = मानता

**व्याख्या** :– वहाँ लंका में राम लक्ष्मण को देख कर एक मनुष्य के समान वचन बोलते हैं आधी रात बीत गई हनुमान नहीं आये । राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को उठा कर गले लगा लिया ।

राम लक्ष्मण से कहते हैं तुम मुझे दुःखी नहीं देख सकते थे । हे भाई तुम्हारा स्वभाव मेरे प्रति सदास कोमल रहा है । मेरे हित के लिए तुम ने माता पिता का त्याग कर दिया तथा मेरे साथ आ कर जंगल में तुम ने ठंड, धूल, आंधी, तूफान को सहन किया ।

हे लक्ष्मण ! तुम्हारा वह प्रेम अब कहाँ गया । तुम मेरे व्याकुल वचन सुन कर उठते क्यों नहीं । यदि मैं जानता जंगल में भाई से बिछड़ना पड़ेगा मैं पिता के वचन को मानता ही नहीं ।

**भाषा सौन्दर्य** :–

1. अवधी भाषा
2. चौपाई छन्द
3. करूण रस
4. दृश्य बिंब
5. बोले वचन, दुखिल देखि, बन बंधु बिछोहु आदि में अनुप्रास अलंकार

सुत बित नारि भवन परिवारा ।
होहिं जाहिं जग बारहिं बारा ।
अस बिचारि जियँ जागहु ताता ।
मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना ।
मनि बिनु फनि करिबर कर हीना ।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही ।
जौं जड़ दैव जिआवै मोहि ।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई ।
नारि हानि बिसेष छति नाहिं ।

**शब्दार्थ** :– बित = धन, बारहिं बारा = बार–बार, अस = ऐसा, सहोदर ताता = सगा भाई, जथा = जैसे, बिनु = बिना, फनि = सर्प, करिबर = हाथी, कर = सूंड, जड़ = कठोर, दैव = भाग्य, जिआवै = जीवित रखता है, जैहऊ = जाऊँगा, कवन = कौनसा, हेतु = लिए, बरू = बहुत, अपजस = अपयश, सहतेउँ = सहना पड़ेगा, बिसे = विशेष, छति = हानि

**व्याख्या** :– पुत्र, धन, स्त्री व भवन संसार में बार–बार बनाये जा सकते हैं । ऐसा विचार कर के मेरे भाई जाग जाओ कि सगा भाई संसार में दोबारा नहीं मिलता ।

जैसे पंख बिना पक्षी, मणि बिना सर्प, सूंड के बिना हाथी अत्यधिक दीन है, वैसे ही मेरा जीवन अत्यधिक दीन है तुम्हारे बिना यदि कठोर भाग्य तुम्हे मार कर मुझे जीवित रखते हैं ।

तुम्हारे बिना मैं अवध कोन–सा मुख ले कर जाऊँगा, लोग कहेंगे स्त्री के लिए प्रिय भाई को गँवा कर आ गया । तुम्हारे बिना संसार में बहुत अपयश प्राप्त होगा । इसलिए स्त्री की हानि बहुत बड़ी हानि नहीं हैं ।

**भाषा सौन्दर्य** :–

1. अवधी भाषा
2. चौपाई छन्द
3. करूण रस
4. दृश्य बिंब
5. जथा पंख ..... कर हीना–दृष्टान्त अलंकार
6. बारहि बारा, करिबर कर, बंधु बिनु–अनुप्रास अलंकार

अब अपलोकु सोकु तोरा ।
सहिहि निठुर कठोर उर मोरा ।।
निज जननी के एक कुमारा ।
तात तासु तुम्ह प्रान अधारा ।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी ।
सब बिधि सुखद परम हित जानी ।।
उतरू काह दैहउँ तेहि जाई ।
उठि किन मोहि सिखावहु भाई ।।
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन ।
स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ।।
उमा उक अखंड रघुराई ।
नर गति भगत कृपाल देखाई ।।

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर
आइ गयउ हनुमान जिमि करूना मँह बीर रस ।।

**शब्दार्थ** :– अपलोक = अपयश, सहिहि = सहना पड़ेगा, निठुर = निष्ठुर, तात = पिता, तासु = उनके, प्रान अधारा = प्राणों के आधार, सौंपिसि = सौंपा या, गहिपानी = हाथ पकड़ कर, स्त्रवत सलिल = बहते है आँसु, प्रलाप = विलाप, विकल = व्याकुल, निकर = समूह

**व्याख्या** :– राम विलाप करते हुए कहते हैं अब बहीुत अपयश और शोक सहना पड़ेगा मेरे निष्ठुर हृदय को । तुम अपनी माता के एक ही पुत्र हो तथा उनके प्राणों के आधार हो

तुम्हारी माता ने तुम्हरा हाथ्ज्ञ पकड़कार मुझे सौंपा थसा सब प्रकार से मुढे तुम्हारा परमहितैषी समझ कर । अब मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगा ? भाई ! उठकर मुझे ये समझाओ ।

दूसरों की चिन्ताओं को दूर करने वाले तरह–तरह से चिन्ता कर रहे हैं तथा उनके कमल के समान नेत्रों से आँसू बह रहे हैं । शिव उमा से कहते है प्रभु श्रीराम अखण्ड है एक मनुष्य का व्यवहार वो अपने भक्तों को दिखा रहे हैं ।

प्रभु राम के विलाप को सुनकर वानर समूह व्याकुल हो गया । उसी समय हनुमान आ गए ऐसे लगा जैसे करूण रस में वीर रस का संचार हो गया हो ।

**भाषा सौन्दर्य** :–

1. अवधी भाषा
2. चौपाई छन्द
3. करूण रस
4. दृश्य बिंब
5. आइ गयउ ..... वीर रस में–उत्प्रेक्षा अलंकार
6. स्त्रवत ..... लोचन–रूपक अलंकार
7. तात तासु तुम्ह, बहु बिधि, सोचत सोच, स्त्रवत सलिल, प्रभु प्रलाप–अनुप्रास अलंकार

हरषि राम भेटेउ हनुमाना ।
अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ।।
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई ।
उठि बैठे लछिमन हरषाई ।।
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता ।
हरषे सकल भालु कपि ब्राता ।।
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा ।
जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा ।।
यह बृतांत दसानन सुनेऊ ।
अति ब्रिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ।।
ब्याकुल कुंभकरन पहिं आवा ।
बिबिध जतन करि ताहि जगावा ।।

**शब्दार्थ** :– हरषि = खुश हो कर, कृतग्य = आभार, सुजाना = ज्ञानी समझदार, भेटेउ भ्राता = भाई से मिले, ब्राता = समूह, बृतांत = बात, विषाद = दुख, सिर धुऊ = पछताने लगे, बिबिध जतन = अनेक यत्न कर

**व्याख्या** :– प्रसन्न होकर राम हनुमान से मिले, परम चतुर व समझदार राम ने हनुमान का आभार व्यक्त किया । तुरन्त ही वैद्य ने लक्ष्मण का उपचार किया तथा लक्ष्मण प्रसन्न हो कर उठकर बैठ गये ।

राम अपने भाई को हृदय से लगा कर मिले । सारा वानर व भालू समूह प्रसन्न हो उठा । हनुमान ने तुरन्त वैद्य को वहीं पहुचा दिया जहाँ से लाये थे ।

लक्ष्मण के ठीक होने की बात जब रावण ने सुनी तो वह दुख से बार–बार अपना सिर धुनने लगा । व्याकुल हो कर कुंभकरण के पास आया और अनेक यत्न कर के वो सोये हुए कुंभकरण को जगाने लगा ।

**भाषा सौन्दर्य :–**

1. अवधी भाषा
2. चौपाई छन्द
3. सिर धुनना मुहावरा
4. पुनि–पुनि–पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार

जागा निसिचर देखिअ कैसा ।
मानहुँ कालु देह धरि बैसा ।।
कुभकरण बूझा कहु भाई ।
काहे तव मुख रहे सुखाई ।।
कथा कही सब तेहिं अभिमानी ।
जेहि प्रकार सीता हरि आनी ।।
तात कपिन्ह सब निसिचर मारे ।
महा महा जोधा संघारे ।।
दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी ।
भट अतिकाय अकंपन भारी ।।
अपर महोदर आदिक बीरा ।
परे समर महि सब रनधीरा ।।

सुनि दसकंधर बचन तब कुभकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान ।।

**शब्दार्थ** :– निसिचर = राक्षस (कुम्भकरण), कालु = मृत्यु, जोधा = योद्धा, संघारे = संहारे, सुररिपु = देवताओं के शत्रु, मनुज अहारी = मनुष्य को खाने वाले, अतिकाय = भारी शरीर वाले, अपर = दूसरे, महोदर = बड़े पेट वाला, रनधीरा = रणधीर

**व्याख्या** :– जागा हुआ राक्षस (कुंभकरण) साक्षात् मृत्यु लग रहा था । कुंभकरण ने अपने भाई रावण से पूछा–'तुम्हारा मुख क्यों सूख रहा है ?' तब रावण ने अभिमान के साथ सारी कहानी सुनाई–कैसे वो सीता का हरण कर के लाया था । रावण ने आगे कहा वानरों ने अनेक राक्षसों को मार दिया, कई महान योद्धा मारे गये ।

दुर्मुख, देवताओं के शत्रु, मनुष्य को खाने वाले योद्धा, भारी शरीर वाले अकंपन तथा दूसरे महोदर आदि वीर युद्ध भूमि में मरे पड़े हैं ।

रावण की बातें सुन कर कुम्भकरण दुखी हो कर रोने लगा और कहने लगा 'जगत जननी जानकी का हरण कर के लाया है, मूर्ख । अब अपना कल्याण चाहता है जो सम्भव नहीं है ।'

**भाषा सौन्दर्य :–**

1. अवधी भाषा
2. चौपाई दोहा छन्द
3. वीर रस
4. दृश्य बिंब
5. मानहुँ कालु देह धरि बैसा उत्प्रेक्षा अलंकार
6. महा–महा पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार
7. संवाद शैली
8. कथा कही, अतिकाय अकंपन अनुप्रास अलंकार

## प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1.** कवितावली में उद्धृत छंदो के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है ।
**उत्तर :–** तुलसी दास केवल भक्त कवि ही नहीं थे, उन्हें अपने युग का सजग पहरेदार भी कहा है । इसी लिए उन्हें अपने युग की कठिनाइयों की जानकारी थी । उन्होंने देखा उन के युग में अत्यधिक बेरोजगारी और भुखमरी थी । किसान, मजदूर, व्यापारी, भिखारी, नौकर आदि सभी बेरोजगार थे । दरिद्रता रूपी रावण ने सब को जकड़ रखा था । सभी लोग बहुत दुखी थे और कहते थे कहाँ जायें क्या करे ?

**प्रश्न 2.** पेट की आग का शमन ईश्वर भक्ति का मेघ ही कर सकता है–तुलसी का यह काव्य–सत्य क्या इस समय का भी युग–सत्य है ? तर्क संगत उत्तर दीजिए ।
**उत्तर :–** तुलसी का कहना है पेट की आग प्रभु की कृपा से बुझती है । यह केवल कवि सत्य नहीं, अटल सत्य है । व्यक्ति विभिन्न कर्म करता है, तरह–तरह के यत्न करता है, परन्तु उसे सफलता नहीं मिलती । कुछ लोग थोड़ा यत्न करते हैं और सफलता के अनेक सोपान चढ़ते हैं, अर्थात् ईश्वर की कृपा के बिना व्यक्ति को उसके परिश्रम का उचित फल नहीं प्राप्त होता । अतः व्यक्ति पेट की आग बुझाने के लिए अनेक यत्न करता हैं, परन्तु मेहनत का फल उसे ईश्वर की कृपा से ही मिलता है ।

**प्रश्न 3.** तुलसी ने यह कहने की जरूरत क्यों समझी ?
धूत कहौ ..... काहू बेटी से बेटा न ब्याहब,
काहू की जाति बिगार न सोऊ । इस सवैया में काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता ?
**उत्तर :–** भारतीय संस्कृति के अनुसार हर माता पिता चाहते हैं कि उनकी बेटी का विवाह उच्च जाति में हो । तुलसी दास अगर कहते काहू के बेटा से बेटी न ब्याहब तो इस से अगर बेटी उच्च या निम्न किसी भी घर में जाती उससे तुलसीदास की जाति का प्रभाव लड़के की जाति पर नहीं पड़ता ।

**प्रश्न 4.** धूत कहौ ..... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है । इससे आप कहाँ तक सहमत हैं ?
**उत्तर :–** धूत कहो वाले छंद में वास्तव में तुलसीदास का स्वाभिमानी भक्त हृदय सामने आया है । कवि कहते हैं चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, परहंस कहे, राजपूत कहे या जुलाहा मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता । मुझे किसी की पुत्री का विवाह अपने पुत्र से नहीं करना है । तुलसी तो प्रसिद्ध राम का गुलाम है, इसलिए जिसे जो अच्छा लगे वह मुझे कह सकता है । मैं तो माँग कर खाता हूँ मस्जिद पर सोता हूँ । मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं है । मुझे तो केवल प्रभु भक्ति से मतलब है ।

**प्रश्न 5.** भ्रातृ शोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है । क्या आप इससे सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।
**उत्तर :–** लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर राम विलाप कर रहे हैं । उस से वे प्रभु राम भी नहीं, और नर लीला भी नहीं कर रहे हैं, बल्कि उनके द्वारा मानव के हृदय के उद्‌गार व्यक्त हो रहे हैं क्योंकि मानव जब अतिशोक में होता है, तो उसका व्यवहार मर्यादित नहीं होता । कुछ ऐसा ही अमर्यादित व्यवहार राम का है । वो व्याकुल हो के कहते हैं–अगर उन्हें पता होता वन में भाई से बिछड़ना पड़ेगा, तो वह पिता का वचन पूरा करने वन नहीं आते । वे यहाँ तक कहते हैं–स्त्री एक जाये तो दूसरी आ सकती है । स्त्री की हानि विशेष हानि नहीं ।

**प्रश्न 6.** शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण का करूण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है ?

**उत्तर :–** जब वैद्य सुषेण कहता है यदि संजीवनी बूटी भोर होने से पहले आ गई, तो लक्ष्मण को जीवित किया जा सकता है । हनुमान संजीवनी बूटी लेने गये हैं । रात बीतती जाती है, हनुमान नहीं आये । इस पर राम विलाप करने लगते हैं । ठीक उसी समय हनुमान आ जाते हैं । अब सब को लगने लगता है लक्ष्मण जीवित हो जायेगा । इससे करूण रस में वीर रस का संचार हो जाता है ।

**प्रश्न 7.** जैहउँ अवध कवन ..... नारि हानि बिसेष छति नाहीं ।।

भाई के शोक में डूबे राम के इस प्रलाप–वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है ?

**उत्तर :–** भाई के शोक में डूबे राम जब प्रलाप करते हैं, तो कह उठते हैं–लक्ष्मण के बिना मैं अवध कौन–सा मुख लेकर जाऊँगा ? लोग कहेंगे–स्त्री के लिए प्रिय भाई को गँवा कर आ गया है । संसार में बहुत अपयश होगा । इस लिए नारी अगर नहीं रहती तो कोई बात नहीं । यह सच है कि एक ही पिता से उत्पन्न हुए भाई की मृत्यु हो जाने पर दूसरा भाई नहीं आ सकता, पर एक स्त्री के न रहने पर दूसरी स्त्री लाई जा सकती है । जहाँ यह बात सत्य है वहाँ यह भी तो सत्य है लक्ष्मण जैसे भाई भी इसी समाज में होते हैं, जिसने अपनी भाभी के लिए अपनी जान जोखिम में डाली । अर्थात् जीवन में रिश्तों का बहुत महत्व है, ये अलग बात है कि दुःख के समय कई बार अनुचित शब्द मुख से निकल जाते हैं ।

**प्रश्न 8.** भाई के शोक में व्याकुल राम की दशा को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए ।

**उत्तर :–** भाई के शोक में व्याकुल राम अपने ऊपर नियन्त्रण नहीं रख पाते और कहते हैं–तुम्हारे माता–पिता ने मुझे तुम्हारा हितैषी समझा था, इसी लिए तुम्हें मेरे साथ वन भेज दिया । यहाँ तुमने सर्दी, गर्मी, बरसात को सहा । अब अगर तुम जीवित नहीं होते, तो मेरी स्थिति मणी बिना नाग, पंख बिना पक्षी तथा सूँड बिना हाथी जैसी हो गई है । केवल इतना ही नहीं अगर मैं तुम्हारे बिना अयोध्या गया, तो तुम्हारी माता को मैं क्या जवाब दूँगा ? संसार में बहुत अपयश मिलेगा, लोग कहेंगे स्त्री के लिए भाई को गंवा दिया । अर्थात् राम का व्यवहार एक शोक में डूबे साधारण व्यक्ति का है ।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM